साहित्यसंहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

मनुष्य का मन होता है चंचल

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

मनुष्य का मन होता है चंचल
रहता है सदैव गतिशील
होता नित आकर्षण
और कभी विकर्षण
मन के पंछी पर
न चलता किसी का जोर
उर जाता उस ओर
जहा रमता इसका मन
रहता मस्त मगन
उर रहा गगन में
तो कभी वन में
पर मनुष्य यह लो मान
आज ही लो ठान
विपरीत परिस्तिथियों में
हर स्तिथियों में
तभी अंकित होगा
स्वर्ण अक्षरों में

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

तेरा नाम इतिहास के
तिथियों में
सफल नहीं हो सकता
'साहिल' कहता
जो धारा में बह जाये
रोके तो रुक जाये
और कोई बहकाए
तो बहक जाये
ऐसा तो मनुष्य मनुष्य ही नहीं
बात है ये सही
वह तो है जीवित मुर्दें सामान
अकल नहीं गदहे सामान
मैं नहीं तू खुद पहचान